# ईशावस्योपनिषद् के परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति एवं सद्भाव

स्मृति बाला, शोधच्छात्रा (पीएचडी), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, ईमेल- smriti29bala@gmail.com

**सारांश:**- वर्तमान परिदृश्य में विश्व शांति और सद्भाव संपूर्ण विश्व के लिए चुनौती बन गया है। कूटनीतिक राजनीति, अर्थव्यवस्था की होड़, भौगोलिक आधिपत्य एवं प्रभुत्व स्थापना की होड़ में पूरा विश्व विभाजित है। ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृति की 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् पृथ्वी को एक परिवार मानने की संकल्पना और उपनिषदीय एकत्व का संदेश ही विश्व शांति और सद्भाव लाने में समर्थ है। यद्यपि आद्यंत उपनिषद् ब्रह्म , जीव, जगत आदि के रहस्यों का उद्घाटन करता है, किंतु इसमें प्राप्त तत्वों एवं दर्शन का हम वर्तमान परिदृश्य में मानव कल्याण हेतु अन्वय करते हुए विश्व शांति एवं सद्भाव को साकार कर सकते हैं। ईशावस्योपनिषद् मानव को सरलतम शब्दों में बंधुत्व का भाव सिखाती है। यह विश्व शांति के लिए अपरिहार्य राष्ट्रों में संतोष के भाव को भी जागृत करने वाले तत्वों को सामने रखते हुए व्यक्तिगत शांति से लेकर विश्व शांति एवं सद्भाव का साकार रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

**कूट शब्द :**- विश्व शांति, सद्भाव, उपनिषद्, कूटनीति, जियोपोलिटिकल (वैश्विक राजनीति) , जियोइकोनामिकल (वैश्विक अर्थव्यवस्था), पर्यावरण, कॉप, ग्लोबल साउथ (भूगोलीय दक्षिण)।

**शोधपत्र**

वैदिक वाङ्मय मानव सभ्यता के आरंभ से अपने ज्ञान द्वारा मानव का निर्देशन करता रहा है। क्रांतदर्शी ऋषियों के सत्यान्वेषण परक अनुभूतियों का कोष वैदिक वाङ्मय अपने लोक कल्याण विषयक दर्शन द्वारा प्राचीन काल से ही मानव का मार्गदर्शन करता रहा है। व्यक्ति से लेकर समाज, राष्ट्र एवं अंततः विश्व कल्याण परक विचारों से संपूर्ण वैदिक वाङ्मय ओत-प्रोत है। इन्हीं उदात्त विचारों से पोषित भारत सदैव से विश्व में **वसुधैव कुटुम्बकम्** का उद्घोष करता रहा है। ऋग्वेद में विश्व शांति और सद्भाव परक अनेकों मंत्र प्राप्त होते। शांति हेतु परस्पर सामंजस्य की स्थापना के लिए ऋषि कहता है-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥
समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि॥
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: ।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥[1]

इन मंत्रों में ऋषि मन, वचन और कर्म में परस्पर समन्वय से मनुष्य में एकता और समरसता की बात करता है। बृहत दृष्टि में यही एकता विश्व एकता बन जाती है और विश्व एकता से विश्व शांति और सद्भाव स्वयमेव साधित हो जाता है। इस प्रकार विश्व कल्याण एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन जाता है।

वैदिक ज्ञानकांड का उत्कर्ष उपनिषद् ग्रंथों में प्राप्त होता है। वैदिक वाङ्मय के अंतिम भाग में निबद्ध होने तथा उनके सारभूत सिद्धांतों का निरूपण करने के कारण उपनिषद् ग्रंथ वेदांत रूप में अभिहित है। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया गया ज्ञान है। इसमें सद् धातु के तीन अर्थ हैं- विशरण (नाश), गति (ज्ञान या प्राप्ति) तथा अवसादन

[1] ऋग्वेद 10.191

अर्थात् शिथिल करना।[2] शंकराचार्य उपनिषद् के संबंध में कहते हैं - *उपनिषादयति सर्वानर्थकरं संसारं विनाशयति, संसारकारणभूतामविद्यां च शिथिलयति, ब्रह्म च गमयति।* [3] अर्थात् सभी अनर्थों को उत्पन्न करनेवाले संसार का यह विनाश करती है, संसार के हेतु स्वरूप अविद्या को शिथिल करती है और ब्रह्म की प्राप्ति करती है। इसमें मुख्य रूप से ब्रह्म, सृष्टि, जीव, आत्मा, प्राण, पुनर्जन्म, कर्म तथा नैतिकता इत्यादि विषयों पर दार्शनिक चितन प्राप्त होता है। उपनिषदों के नैतिक सिद्धांत शाश्वत शांति या परम कल्याण की दिशा में उन्मुख हैं। बृहत स्तर पर इसे हम विश्व शांति और कल्याण का दार्शनिक व्याख्या करने वाला ग्रंथ कह सकते हैं।

इस शोधपत्र का विषय ईशावस्योपनिषद् के संदर्भ में विश्व शांति, सद्भाव एवं विश्व कल्याण है। किसी भी राष्ट्र की गतिविधियां उस राष्ट्र की संस्कृति और उसके दर्शन से मार्गदर्शित होती हैं। भारतीय दर्शन के इन्हीं उदात्त विचारों के कारण ही भारत सदैव से विश्व शांति और कल्याण का अग्रदूत रहा है। वर्तमान समय में सूचना और प्रौद्योगिकी के विकास से भौगोलिक बाधाओं को पारकर संपूर्ण विश्व एक सूत्र में बंध गया है। इसके लिए जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम् कहा गया है उसी प्रकार वैश्विक निकटता को दिखाने के आधुनिक विद्वानों ने एक नई शब्दावली दी है- *ग्लोबल विलेज।* वर्तमान में पूरा विश्व वैश्विक तनाव से युक्त है। इसके अनेकों कारण हैं, यथा- राष्ट्रों के मध्य युद्ध, राष्ट्रों द्वारा प्रभुत्व स्थापना एवं ग्लोबल पावर बनने की होड़, संसाधनों को लेकर होने वाली लड़ाई, आतंकवाद, अलगाववाद, पर्यावरणीय असंतुलन इत्यादि। इन सभी कारणों से विश्व शांति और सद्भाव एक चुनौती बन गया है। आज विश्व में अशांति का प्रमुख कारण स्वयं की रक्षा हेतु युद्ध या युद्धमय स्थिति नहीं है, अपितु स्वयं का प्रभुत्व दूसरे राष्ट्रों पर स्थापित करने के लिए युद्ध है। विश्व की जियोपोलिटिकल और जियोइकोनॉमिकल स्थिति को देखकर इस स्थिति का पता लगाया जा सकता है। पिछले वर्ष आरंभ हुआ रूस-यूक्रेन का युद्ध, चीन की साउथ ईस्ट एशिया पॉलिसी, चीन की बेल्ट एंड रोड इनसिएटिव, चीन द्वारा भारत को हिद महासागर में घेरने के उद्देश्य से अपनाया गया स्टिग ऑफ़ पर्ल इनसिएटिव; ये सभी स्थितियां राष्ट्रों द्वारा अन्य राष्ट्र या विश्व पर अपने प्रभुत्व की स्थापना के लिए ही है। इसका प्रमुख कारण राष्ट्रो में असंतोष है। महत्वाकांक्षा की इस होड़ में विश्व अशांति स्वाभाविक हो गया है।

ईशावस्योपनिषद् के प्रथम मंत्र में ऋषि कहते हैं -
ॐ ईशा वास्यमिदम् सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।[4]

जो कुछ स्थावर जंगम संसार है, वह सभी ईश्वर के द्वारा आच्छादित है। उसका त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए और किसी के धन की इच्छा नहीं करनी चाहिए। वैश्विक तनाव का मुख्य कारण ही लोभ और असंतोष है, लोभ अनेकों प्रकार के हैं; यथा अर्थव्यवस्था में सर्वोच्च बनने का लोभ, शक्ति में सर्वोच्च बनने का लोभ, ग्लोबल पावर बनने का लोभ, कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनने का लोभ इत्यादि। विश्व अशांति के जिन तत्वों की व्याख्या पूर्व में की गई है, वे राष्ट्रों द्वारा अपने प्रभुत्व की स्थापना, राष्ट्रों द्वारा शक्ति प्रदर्शन, स्वयं के उत्थान से प्रेरित राजनीति है। ईशावस्योपनिषद् का यह मंत्र स्व के विस्तार, स्थावर जंगम संसार में भगवत् स्वरूप के अनुभव, लोभ का त्याग तथा सभी भोगों का भोग अनासक्त भाव से करने की बात करता है। यदि ऐसी स्थिति वैश्विक स्तर पर आती है तभी विश्व बाजारवाद, पूंजीवाद, उपभोक्तावाद जैसी दुष्परिणामी स्थिति से निकलकर शांति, सद्भाव और कल्याण की ओर जा सकता है।

[2] उमाशंकर शर्मा ऋषि, संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-74

[3] ईशावस्योपनिषद् शांकरभाष्य

[4] ईशावस्योपनिषद्, मंत्र 1

इस मंत्र में ऋषि स्थावर जंगम संसार को अभेद की दृष्टि से देखते हैं। जब भी कभी मानव विकास की बात करता है, वह विकास मानव केन्द्रित ही होता है। जिस पृथ्वी और पर्यावरण में मनुष्य रह रहा है और जिसके कारण वह जीवित है, उसकी बात वह तबतक नहीं करता जबतक की पर्यावरण ह्रास के कारण प्रकृति अपने दुष्परिणाम नहीं दिखाती। विश्व कल्याण के लिए पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं। किंतु स्वयं केंद्रित विकास की इस होड़ के कारण पर्यावरण प्रदूषण में इतना घातीय (एक्सपोनेंशियल) वृद्धि हो रहा है कि ये प्रयास प्रभावी नहीं है। इसके प्रभावी न होने का दूसरा कारण प्रयासों में ईमानदारी की कमी भी है। इसका कारण राष्ट्र संस्कृति में मानव और पर्यावरण में एकीकृत (इंटीग्रेटेड) दृष्टि ना होकर भेद दृष्टि का होना है। यह स्थिति विश्व के अधिकांश राष्ट्रों की है। किंतु, भारतीय संस्कृति सदैव से पृथ्वी, पर्यावरण और अन्य सभी जीव जंतुओं के प्रति सचेत रही है और इसके संबंध में दृष्टि हमेशा एकीकृत रही है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥[5]

जो सभी भूतों को स्वयं में देखता है एवं सभी भूतों में स्वयं को देखता है, इस सर्वात्म-दर्शन के कारण वह किसी से घृणा नहीं करता। इस सर्वात्म-दर्शन के कारण ही भारत की पर्यावरण के प्रति अभेद दृष्टि रही है। भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण से संबंधित मुद्दों को उठाता है। भूमिगत स्तर पर भी भारत पर्यावरण संबंधित होने वाले कांफ्रेंस में सक्रियता से भाग लेता है। क्लाइमेट चेंज को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले COP (कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टीज) के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भी भारत तत्पर रहता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पर्यावरण संतुलन एवं विश्व शांति के लिए अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य को जीवित रहने हेतु और अपने विकास के लिए प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर चलना ही होगा।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥[6]

अर्थात् जिसकी दृष्टि में आत्मा ही सर्वभूत है, उस एकत्वदर्शी में शोक और मोह नहीं रह जाता। व्यक्तिगत स्तर से ऊपर उठकर, यह स्थिति यदि वैश्विक स्तर पर आती है, तभी राष्ट्रों में परस्पर संघर्ष की स्थिति समाप्त होगी; वैश्विक महत्वकांक्षा (ग्लोबल एस्पिरेशन) प्रभुत्व को लेकर नहीं अपितु शांति और सद्भाव को लेकर होगा। भारत अपने एकत्व दर्शन एवं सर्वात्मवाद के कारण ही विश्व शांति और सद्भाव का अग्रदूत रहा है। जहां अन्य राष्ट्र आर्थिक और कूटनीतिक लाभ को ध्यान में रखकर बात करते हैं, वहां भारत सर्वोत्थान की बात करता है। भारत के गुटनिरपेक्ष नीति एवं वर्तमान प्रयासों के कारण ही आर्थिक, कूटनीतिक, सामाजिक और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से पिछड़ा हुआ ग्लोबल साउथ अपनी आवाज विश्व मंच पर रख रहा है और वैश्विक विकास की मुख्य-धारा से जुड़ रहा है। इस स्थिति से शक्ति का संतुलन (बैलेंस ऑफ़ पावर) बना रहता है और कोई राष्ट्र कमजोर राष्ट्र का शोषण नहीं करता है। भारत की इस उदात्त भावना और उदारवादी नीति का बीज यही एकत्वदर्शिता और सर्वात्मवाद है।

विश्व गुरु बनने के पथ पर अग्रसर भारत अपनी स्थिति वैश्विक राजनीति में बदल रहा है। वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। भारत विश्व में अपनी कूटनीतिक स्थिति को भी सुदृढ़ कर रहा है और एक वैश्विक शक्ति (ग्लोबल पावर) के रूप में उभर रहा है। भारत के इन प्रयासों के पीछे का दर्शन है कि याचना के स्थान पर शक्तिपूर्ण आग्रह अधिक महत्व रखता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है-

[5] ईशावस्योपनिषद्, मंत्र 6

[6] ईशावस्योपनिषद्, मंत्र 7

बिनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति॥[7]

इस प्रकार वैश्विक अशांति के सभी कारण, यथा राष्ट्रों के बीच युद्ध, बाजारवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, वैश्विक शक्ति (ग्लोबल पावर) बनने की होड़, पर्यावरणीय असंतुलन और ह्रास इत्यादि सभी का कारण मानव, समाज और राष्ट्रों का परस्पर भेद-दृष्टि, स्व-केंद्रित विकास और असंतोष है। जबतक स्व-केंद्रित विकास की भावना नहीं जाती और एकत्वदर्शन, सर्वात्मवाद का दर्शन राष्ट्रों में नहीं आता, तबतक विश्व शांति और सद्भाव कल्पनामात्र ही है। एकत्ववाद को उद्घाटित करने वाली उपनिषद् मानव दृष्टि को परिवर्तित कर उसे समग्रता की ओर ले जाने में अत्यंत सहायक है। वास्तविकता में इससे इतर अन्य कोई माध्यम भी नहीं है। अतः उपनिषद् दर्शन विश्व शांति एवं सद्भाव के साथ-साथ समग्र विकास और विश्व कल्याण की दृष्टि से सर्वोच्च महत्ता रखता है।

**संदर्भ-ग्रंथ सूची :-**


1) 'ऋषि', डा. उमाशंकर शर्मा, संस्कृत साहित्य का इतिहास'
2) आत्रेय, डा. भीखनलाल, भारतीय नीति-शास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, 1964
3) ईशादि नौ उपनिषद्, सानुवाद शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सत्रहवां पुनर्मुद्रण
4) पाण्डेय, उमा, औपनिषदिक परमसत् एवं मूल्य-सिद्धांत, विवेक घिल्डियाल बंधु, वाराणसी
5) रानाडे, रामचंद्र दत्तात्रेय, कंस्ट्रक्टिव सर्वे ऑफ उपनिषद्, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1971
6) वेदालंकर, जयदेव, वैदिक दर्शन, भारतीय विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1991
7) रामचरितमानस, तुलसीदास
8) फड़िया, डा. बी.एल; फड़िया, डा. कुलदीप, अंतर्राष्ट्रीय संबंध के सिद्धांत, साहित्य भवन पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण
9) Dattagupta, Rupak, Global Politics, Pearson publication, first edition, 2019


[7] रामचरितमानस 5.19.57